# अध्याय : 2

# मोहन राकेश के नाटकों में ऐतिहासिकता

## अध्याय : 2

## मोहन राकेश के नाटकों में ऐतिहासिकता

"साहित्य उन विषयों को नहीं अपनाता जो अतीत हैं। उनको अपनाता है जो शाश्वत है।

- मैथ्यू अर्नाल्ड

इतिहास का शाब्दिक अर्थ ऐसा ही था। अतीत की घटनाओं का लेखा-जोखा, इतिहास माना जाता है। इसमें तिथि, नाम, घटनायें महत्वपूर्ण होती हैं पर आज इतिहास शब्द में इनके अलावा मानवीय संबंधों और जीवन-मूल्यों को अधिक महत्व दिया जा रहा है। यह बात ऐतिहासिक नाटकों का विकास देखने पर हमें दिखायी देगी। जयशंकर प्रसादजी ने जिस अर्थ में ऐतिहासिक नाटक लिखे हैं परवर्ती नाटककारों ने उस अर्थ में ऐतिहासिक नाटकों का सृजन नहीं किया चाहे अश्क का "जय पराजय" हो, जगदीशचन्द्र माथुर का "कोणार्क" हो, सुरेन्द्र वर्मा का "आठवाँ सर्ग" हो। प्रसादजी का विश्वास रहा है "इतिहास का अनुशीलन किसी भी जाति को अपना आदर्श संगठित करने के लिए अत्यंत लाभदायक होता है।" विशाख की भूमिका में इसे स्पष्ट किया है। इसीसे प्रेरित होकर आपने नाट्य-सृजन किया है। राकेशजी की दृष्टि अलग है जिसे आपने "लहरों के राजहंस" की भूमिका में लिखा है - "साहित्य इतिहास के समय में बँधता नहीं, समय में इतिहास का विस्तार करता है। युग से युग को अलग नहीं करता, कई कई युगों को एक साथ जोड़ देता है। इस तरह इतिहास के "आज" और "कल" उसके लिए आज और कल नहीं रह जाते। समय की असीमता में कुछ ऐसे जुड़े हुए क्षण बन जाते हैं जो जीवन को दिशा-संकेत देने की दृष्टि से अविभाज्य हैं। इस तरह साहित्य में इतिहास यथा तथ्य घटनाओं में व्यक्त नहीं होता, घटनाओं को जोड़ने वाली ऐसी कल्पनाओं में व्यक्त होता है, जो अपने ही एक नये और अलग रूप में इतिहास

का निर्माण करती है।"

मोहन राकेश ऐसे नाटककार थे जो मानवीय अनुभूतियों को साहित्य द्वारा व्यक्त करते थे। मनुष्य की कुण्ठाओं का चित्रण करते थे। मनुष्य के जीवन का संघर्ष, कुण्ठा, मानसिक उलझनों के मूल में जाकर उसको पात्रों द्वारा व्यक्त करते थे। राकेश के साहित्य में ज़्यादातर मध्यमवर्गीय परिवारों का चित्रण है। यह मध्यमवर्गीय समाज कालचक्र की गति में पीसता रहा है। इन्हीं परिवारों के समस्या का चित्रण राकेश ने किया है। मोहन राकेश के नाटकों को आलोचक "मिथकीय संज्ञा" देते हैं। मिथकीय का अर्थ है इतिहास के सहारे दिया हुआ आधुनिक बोध। यह बात सही है कि राकेश ने इतिहास का सहारा लेकर आधुनिक बोध की ओर निर्देशन किया है।

जब कोई साहित्यकार साहित्य-सृजन करता है तब उसके मन में कोई न कोई संदर्भ होता है, उद्देश्य होता है। अगर साहित्यिक कोई उपदेश देना चाहे तो साहित्य में उपदेश के साथ रंजकता का होना अनिवार्य है। नाटककार से इस सम्बन्ध में यही अपेक्षा की जाती है कि बात को ऐसे रूप में प्रस्तुत करें कि पाठक के मन में बिंब स्पष्ट हो जाये और मनोरंजन हो।

मोहन राकेश के पहले मिथक का प्रयोग जयशंकर प्रसाद, जगदीशचंद्र माथुर, उपेन्द्रनाथ अश्कजी ने किया है। प्रसादजी के समय में जनजागरण, देशसेवा की ओर समाज को ले जाना अनिवार्य था। प्रसादजी ने यहाँ मनोरंजन के लिये इतिहास का सहारा लेकर भारतीय आदर्श और पुनरुत्थान के लिये मिथक का उपयोग किया। स्वाभाविकता, कलात्मकता, काव्यात्मकता के साथ आधुनिक बोध का उद्देश्य महत्वपूर्ण था। राकेश का इसी बारे में कहना है - "साहित्य में इतिहास अपनी यथातथ्य घटनाओं में व्यक्त नहीं होता। घटनाओं को जोड़नेवाली ऐसी कल्पनाओं में व्यक्त होता है, जो अपने ही एक नये अलग रूप में इतिहास का निर्माण करती है।"[1]

इसी तरह राकेश ने कुलमिलाकर दो मिथकीय नाटकों की सृष्टि की है। "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में रोमांटिक भाव के साथ आधुनिक बोध के आयाम हैं। राकेश ने पूरी सफलता के साथ आधुनिक मानव और मानवीय संबंधों से निर्मित

समस्याओं को निरूपित किया है। "नाट्य-लेखन के क्षेत्र में राकेश की प्रातिभिक परिकल्पनाएँ यथार्थ से पुष्ट, समकालिन जीवन की त्रासदी से संस्पर्शित और अस्तित्ववादी चेतना से वलयित हैं।"[2]

ऐतिहासिक चोला पहने, आधुनिक व्यक्ति कालिदास नाटक का नायक है। मोहन राकेश ने "कालिदास" नाम का प्रयोग चतुराई से किया है। नाटक में कालिदास के जीवन का बखूबी उपयोग किया है। संस्कृत साहित्यकार कालिदास के जीवन की घटनायें और कल्पना का मिश्रण बनाकर मोहन राकेश ने एक सुंदर नाटक का निर्माण किया "आषाढ़ का एक दिन"। कालिदास के अलावा राकेश अन्य पात्र का निर्माण कर सकते थे। लेकिन ऐसा राकेश ने नहीं किया। राकेश का कहना था कालिदास के अलावा अन्य पात्र का निर्माण करना कोई कठिन बात नहीं है लेकिन सामने कालिदास जैसा योग्य पात्र अपने पूरे व्यक्तित्व के साथ खड़ा है तो क्यों नये पात्र के निर्माण में समय व्यस्त करें ? कालिदास से पाठक भलीभाँति परिचित हैं, पाठकों के इसी मानसिकता का उपयोग राकेश ने किया है। कालिदास का नाम और उसके जीवन में घटित घटनाओं का उपयोग किया। नाटक में इतिहास का सहारा लेने से पूरा नाटक ऐतिहासिक नहीं बन जाता। कालिदास मोहन राकेश के लिये कोई विशेष व्यक्तित्व नहीं था, सृजनात्मक शक्तियों का प्रतीक था। पूरे नाटक में यह प्रतीक अन्तर्द्वन्द्व को संकेतीत करता है। व्यक्ति कालिदास को अन्तर्द्वन्द्व से गुजरना पड़ा या नहीं यह गौण बात है। हर काल में बहुतों को उसमें से गुजरना पड़ा है। यह अन्तर्द्वन्द्व व्यक्त करने वाला प्रतीक हैं "कालिदास"। आलोचकों के लिये कालिदास संशोधन का विषय रहा होगा लेकिन राकेश के लिये कालिदास आम सामान्य व्यक्ति हैं। इतिहास वर्तमान को समझने और भविष्य को सँवारने के लिए आवश्यक है। अनुभव के आधार पर शिक्षा देनेवाला मार्गदर्शक है इतिहास। साहित्य को इतिहास या कल्पना से परहेज नहीं है, लेकिन राकेश का साहित्य सिर्फ मानवीय अनुभूतियों का चित्रण करता है। क्योंकि मानवीय अनुभूतियाँ शाश्व हैं। राकेश ने इतिहास का सहारा लेकर कलाकार की वेदना पर प्रकाश डाला है। मानवी अनुभूतियों को महत्व दिया गया है इसलिये यह नाटक समसामायिक युग का प्रतिबिंब बन गया है। मोहन राकेश की दृष्टि हमेशा आत्मपरक रहीं है। नाटक की कथावसतु की ऐतिहासिकता

का होना गौण बात है। कथावस्तु मानव के अस्तित्व बोध और मानसिकता व्यक्त करने का माध्यम मात्र बनकर रह जाती है।

इसी तरह मोहन राकेश का नाटक "आषाढ़ का एक दिन" का कथानक कालिदास के जीवन और साहित्य सृष्टि के सम्बंन्ध में प्रचलित विभिन्न मतों के सार पर आधारित है। इस नाटक का आधार इतिहास है। राकेश ने अतीत के इतिहास का विवरण प्रस्तुत नहीं किया है। इतिहास में घटित घटनायें, कल्पना शक्ति के मिश्रण से राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में ऐतिहासिक परिवेश में आधुनिक युग-बोध का चित्रण किया है। पुराने विषय को नये रूप में प्रस्तुत किया है।"लहरों के राजहंस" नाटक में"मिथक" का प्रयोग किया है। इस पद्धति का उपयोग मध्यकालिन बोध की दृष्टि से किया गया है। रोमांटिक बोध के साथ आधुनिकता के बोध की दृष्टि से भी किया गया है। प्रसाद ने इतिहास का सहारा लेकर अपने युग को रोमांटिक दृष्टि से उजागर किया है। प्रसाद ने वैदिक पात्रों के नामों का आधार बनाया है। मनु वेदकालिन पात्र है या प्रसाद कालीन ? ऐसे ही मोहन राकेश के कालिदास और नन्द ऐतिहासिक पात्र न होते हुए यह पात्र राकेशकालिन बन जाते हैं। राकेशकालिन समस्याओं की तरफ यह पात्र अंगुलीनिर्देशन करते हैं। अपने युग की समस्याओं को उजागर करने के लिये राकेश ने ऐसे ही ऐतिहासिक पात्र का सहारा लिया जो राकेशकालिन समस्याओं के बीच खडा है। वही सबकुछ भोग रहा है जो आज आधुनिक युग में हम भोग रहे हैं। समस्या वही की वही है। मानवीय अनुभूति शाश्वत होने के कारण मानसिक द्वन्द भी वही है। इसे युग बीत जाने का फर्क नहीं पडता, समस्या वही, आदमी की उलझने वही हैं।

कालिदास ग्रामप्रांतर में रहने वाला साधारण-सा युवक है। आर्थिक विपन्नता के कारण अपने प्रेम प्राप्ति से वंचित है। मामा मातुल का आश्रय न होता तो एक अनाथ कालिदास दो वक्त की रोटी से वंचित रहता। इस युवक में असाधारण प्रतिभा है। यही इसकी खासियत है। यही असाधारण प्रतिभा कालिदास के लिये अभिशाप बन जाती है। गाँव में एक प्रेयसी मल्लिका के सिवाय अन्य कोई व्यक्ति कालिदास के प्रतिभा और सर्जनशक्ति को महत्व नहीं देता है। सिर्फ साहित्य-सृजन

कर के पेट की समस्यायें नहीं सुलझती हैं। इसी कारण कालिदास गायें-भैंसे चराने ले जाता है। पर्वतराजियाँ, घाटियाँ कालिदास को नयी-नयी कल्पनायें देती हैं। मल्लिका, कालिदास की प्रतिभा का आदर करती है। यहाँ तक कालिदास के सामने एक ही समस्या है कि धनार्जन करना और मल्लिका से विवाह करना। धनार्जन सबसे बड़ी समस्या है। ऐसे में कालिदास के लिये सुवर्ण अवसर आ जाता है। उज्जयिनी से राजकवि सम्मान स्वीकारने के लिए राजा से आमंत्रित किया जाता है। राजकवि सम्मान प्राप्ति से बाकी समस्याओं का समाधान हो सकता है। उज्जयिनी जाकर प्रतिभा सामर्थ्य पर राजा से उचित धनार्जन करना सरल सीधी बात है। लेकिन कवि कालिदास उज्जयिनी जाना नहीं चाहता। कालिदास का कहना है, "राजकीय मुद्राओं से कवि की प्रतिभा को खरीदा नहीं जा सकता है।" कालिदास हो या कोई कलाकार हो जहाँ उसके स्वाभिमान को ठेंस पहुँचे बर्दाश्त नहीं कर सकता। राजाश्रय के साथ एक जंजीर होती है, कलाकार खुलकर नहीं ले सकता। कलाकार कालिदास को अपने परिवेश से कट जाने का भय भी है। कलाकार साहित्य में वही उद्धृत करता है जो उसने अपने परिवेश से पाया है। कलाकार के लिये मनचाहा परिवेश होना कलाकार की जरूरत है। अनचाहे माहौल में कलाकार की सृजनशक्ति कुण्ठित होती है। कलाकार कई सूत्रों में अपनी भूमि से जुड़ा होता है। राजाश्रय जैसे अर्थार्जन के साधनों में स्वयं को जकड़ लेना कष्टप्रद होता है। धन मिलता है लेकिन मन को शान्ति नहीं मिलती।

राकेश ने कालिदास को अपने समकक्ष जाना है। यह सिर्फ कालिदास की बात नहीं है, सभी कलाकारों की बात है कि अपने मनचाहे परिवेश को न पाना। राकेश भी एक मृदु, सृजनशील कलाकार थे। राकेश नौकरियों के बंधन आसानी से तोड़ते रहे। कालिदास के मुख से आम कलाकार कहता है कि प्रतिभा को खरीदा नहीं जा सकता। राकेश का नौकरियों से इस्तिफे देना इसी बात का परिचायक है। लेकिन इससे एक कठोर वास्तव सामने आता है कि अगर आप धनार्जन नहीं करें तो जीवन कैसे गुजारें ? यहाँ अनायस परिस्थिति से समझौता करना पडता है और प्रतिभा को मन में दबाये अर्थप्राप्ति के लिये पाँव में जंजीर पहननी पड़ती है।

राजाश्रय या राजनीति की समस्यायें ज्वलंत हैं। कलाकार को राज पुरस्कार राज्यसभा की सदस्यता, बड़े पद आदि बातों से खरीदा जाता है। इसमें कलाकार ऐसा उलझता जाता है कि एक ओर धन की आवश्यकता और दूसरी ओर मन में दबायी अपनी आशा और इच्छायें दोनों बिंदुओं में खींचता रहता है। राज्याश्रय से सम्मान, धन तो मिल जाता है लेकिन सर्जना शक्ति का विनाश होता है। यह आधुनिक युग की जीती-जागती समस्या है। कालिदास के प्रतीक से इस समस्या पर प्रकाश डालने का प्रयास राकेश ने किया है। कालिदास एक लेखक और राकेश नाम का आधुनिक युग का लेखक दोनों के सामने समस्या वही हैं। युग के परिवर्तन से इन समस्याओं में कोई परिवर्तन नहीं आया है। चेहरे और युग बदलते रहे लेकिन समस्यायें ज्यों कि त्यों हैं। राज्याश्रय से मिली सुख-सुविधा कालिदास को अपार धन तो मिलाकर देती है लेकिन अंतर्मन में छुपा कलाकार असंतुष्ट रहती है। अंत में धन का लोभ, मोह त्याग कर वापस अपनी भूमि पर लौटने वाला कालिदास राकेश है, जो समय-समय पर धनार्जन के लिये नौकरियाँ करता रहा और छोड़ता रहा। यह सिलसिला जीवन के अंतिम क्षण तक चलता रहा। कलाकार दोनों बिंदुओं में द्वन्द्व महसूस करता रहा।

आज हम देखते हैं लेखन एक स्वतंत्र अथार्जन का साधन नहीं बन सकता, और लेखक को मानसिक रूप से स्थिर नहीं रख सकता। मूल समस्या यह है कि व्यावहारिक जीवन में विभिन्न विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्थाओं में से किसी एक के साथ कैसे संबंध होकर चले ? राजनीति के इस खिलवाड़ से आज का लेखक तंग आ गया है। नौकरी करनी है तो अपना वक्त एक तरह से बेचना पड़ता है, इस बीच लेखक की सृजन शक्ति दुबली हो जाती है। जिंदगी की सारी समस्यायें दूर करने में सारी शक्ति लग जाती है। इस तरह हम साहित्यकार से कैसे उम्मीद करें कि अपने लेखन द्वारा समाज को कुछ नया विचार दें। खुलकर हम सही और गलत कह नहीं सकते। इस बात का प्रमाण यही है कि मोहन राकेश ने जो उच्च-कोटियों की रचना का निर्माण किया वह सब उस समय किया जब वे किसी नौकरी में नहीं रहे अथवा नौकरी के प्रति ईमानदार नहीं रहें।

नारी समस्या भी इस नाटक में आधुनिक बोध लेकर सामने प्रस्तुत हो गयी है। इतिहास स्वयं को दोहराता है। वही घटनाएँ, वेश, नाम, रूप बदलकर सामने आती हैं। समाज में एक समय में नारी को प्रभुत्व था - आगे चलकर समाज पुरूष-प्रधान बना। नारी को अपना प्रभुत्व पुनः स्थापित करने के लिये संघर्ष करना पड़ रहा है। स्वयं को स्थापित करने में बहुत कुछ तोड़ना पड़ा है। जिसका सबसे अधिक घातक प्रभाव पड़ा है पुरूष पर। परिवार, आपसी संबंध, संतान का संबंध, समाज की नैतिक मर्यादा सभी को झटका-सा लगा है।

राकेश के नाटकों का पुरूष बदला नहीं है, नारी के पुर्नस्थापन या पतन से उसके स्थान को कोई फर्क नहीं पड़ा है। सचमुच का सम्राट है यह। पुरूष के आचरण और अधिकार को चुनौती कौन दे ? नारी को दुय्यम स्थान अनायस मिलता है। "आषाढ़ का एक दिन" की नायिका मल्लिका नारी अभाव सहते-सहते अपना अस्तित्व खो चुकी है। किसी से अधिकार नहीं माँगती है, न किसी को दोष देती है। पुरूष के सामने नारी के अधिकार का प्रश्न नहीं उठाती है। नारी के जीवन को पूरी तरह खोखला करता है यह पुरूष-प्रधान समाज। आज नौकरी के लिए परिवार से बाहर जाने वाली नारी क्या कुछ सहन नहीं करती हैं ? हर समय पुरूषार्थ से टक्कर लेनी पड़ती है। अपनी शक्ति को सिद्ध करना पड़ता है। लेकिन यह सब सिर्फ 25 प्रतिशत नारियाँ करती हैं। बाकी नारियाँ कीड़े-मकोड़ों की तरह जीवन व्यतीत करती हैं।

मल्लिका ऐसी अनगिनत नारियों का प्रतीक है कि जो अपने लिये कम लेकिन औरों के सुख के लिये ज्यादातर जीवन बिताती हैं। मल्लिका कालिदास पर अधिकार जता सकती थी। लेकिन उसका विश्वास उसे धोखा दे जाता है। कालिदास का प्रेम उसकी जुबान पर ताला लगाता है। प्रेम के अंधे विश्वास ने मल्लिका का पूरा जीवन शून्य बना दिया। मल्लिका तो कालिदास की प्रतिभा थी।

नारी के सिवाय पुरूष अधूरा है लेकिन आज तक यह बात पुरूष स्वीकारने में हिचकिचाता रहा है। प्रेम से हो या अन्याय से वह नारी को दुय्यम स्थान से ऊपर उठने नहीं देता। नारी का प्रवंचना सहन करते जाना और अन्त तक प्रवंचित

रहना आधुनिक समाज की कुंठाओं की ओर संकेत करता है। हमारे समाज में मल्लिकायें हजारों हैं जो परिस्थिति के चक्र में पीस कर टूट रही हैं।

"लहरों के राजहंस" नाटक का आधार अश्वघोष का "सौंदरानन्द" काव्य है। मोहन राकेश ने काव्य से कथा संकेत लेकर नाट्य-रूप में प्रस्तुत किया है। नाटककार राकेश ने नन्द और सुंदरी के चरित्रों को लेकर एक ऐसे अन्तर्द्वन्द का चित्रण किया है जिसका सम्बन्ध उस युग से नहीं, आज के आधुनिक युग से है। परिवेश ऐतिहासिक है लेकिन यह नाटक सर्वथा आधुनिक है।

नन्द की स्थिति यह है कि वह आकर्षणों के बीच फँसा हुआ है। नन्द अपने आप को अकेला महसूस करता है। अस्तित्व के लिये झगड़ रहा है। नन्द का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व है ही नहीं। सुंदरी और बुद्ध जैसे दो बलशाली बिंदुओं में नन्द अपना स्वतंत्र अस्तित्व भूल गया है। जिस ओर खींचा जाये उसी ओर खींचता जा रहा है, यही नन्द की समस्या है। नन्द पार्थिव वृन में रहकर आध्यात्मिक सुख चाहता है। वह किसी के मूल्य और मान्यताओं को ओढ़ कर नहीं जी सकता। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि किसी एक बिंदू पर वह टिक नहीं सकता है।

नन्द की दुविधा में आधुनिकता का बोध है। सुंदरी धरती का प्रतीक है जो नन्द को बाँध रखना चाहती है। नन्द बन्धन तोड़कर मुक्त खुली साँस लेना चाहता तो है लेकिन यह सबकुछ कर नहीं सकता। नन्द द्वन्दपूर्ण व्यक्ति का व्यक्तित्व है जो अपने हाथ में जो सुख है उसे भोग नहीं सकता है। कुछ और ऐसी बात है जो नन्द को अपनी ओर खींच रही है। आसक्ति और अनासक्ति का द्वन्द राकेश ने प्रस्तुत किया है। समूह के बीच नितान्त अकेला महसूस करना, बहुत बौना सामर्थ्यहीन महसूस करना, नन्द जैसे व्यक्ति की नियति है। नन्द के माध्यम से आधुनिक व्यक्ति का परिवेश के साथ होने वाला अर्थहीन संघर्ष दिखायी देता है। आज इन्सान जिन्दा रहने के लिये इतना झगडता है कि झगडते-झगडते थक जाता है। थक कर अपनी ही थकान से मर जाता है। अपने ही क्लांति से मरने वाले मृग की तरह।

जीवन से जुड़ना और टूटना मानव की नियति है। मध्यमवर्गीय समाज के जीवन यात्रा में यह नियति बहुत बडी अहमियत रखती है। जीने के लिये जानलेवा संघर्ष है फिर भी जीने की आदिम लालसा है। आत्मरक्षा और आत्मविनाश के बीच एक साथ जीने वाला नन्द आत्मविनाश को नियंत्रित करता है और फिर स्वयं आत्मरक्षा के लिये लड़ता है। आज मानव सुख के लिये भटक रहा है। सुख मृगजल की तरह उसे दूर है जिसे पाने के लिये अविरत संघर्ष करना पडता है। संघर्ष मानव की नियति है। स्पष्ट है कि आज के युग में परिस्थितियों द्वारा नियंत्रित मानव की एकमात्र नियति है पीड़ा भोगना। जिससे लाख कोशिशों के बावजूद छुटकारा नहीं पा सकता। यह विश्व और जीवन ऐसा बन गया है जहाँ मानवीय कामनाओं की पूर्ति असंभव है।

जीवन के प्रारम्भ में मन में सँजोयी मनोकामनायें यथार्थ से टकराकर बिखर जाती हैं। जीवन संबंधी दृष्टिकोण तो क्या जीवनक्रम तोड़ देता है। ऐसा नंगा व्यक्ति बन जाता है आदमी, जिसे कोई दिशा नहीं मिल रही है, अपने ध्रुव पर डगमगाती दिशाएँ उसे तेना चाहती है। नन्द और सुंदरी आधुनिक जीवन में जीते स्त्री-पुरुष है। नारी का अहं और पुरुष का कमजोर होना, दोनों के बीच का यह संघर्ष है।

इन दोनों नाटकों में इतिहास भी है, आधुनिकता और सांस्कृतिक दृष्टि भी है।

राकेश ने इतिहास को तथ्यों का संकलन माना है। इसका सहारा लेने से साहित्य इतिहास नहीं बनता। इसलिए राकेशजी के नाटकों में ऐतिहासिक तथ्य खोजने वाले तथा उसकी प्रामाणिकता पर विचार करने वाले आलोचकों को निराश होना पड़ा है।

"आषाढ़ का एक दिन" का कवि कालिदास और मल्लिका की वस्तु में कालिदास ऐतिहासिक होते हुए भी इतिहास से भिन्न हैं। यहाँ का कालिदास उसकी भावना प्रधानता, मानवीय संवेदनाओं के साथ उतर आया है। वह राजकवि, कश्मीर

का शासक बनने पर भी अपने परिवेश को भूल नहीं पाता। मल्लिका का प्रेम उसे लौटाता है पर वह उसे विवाहिता माँ के रूप में मिलती है तो समय के शक्तिशाली रूप के सामने वह निराश होकर लौटता है। यहाँ की मल्लिका कालिदास की आस्था का विस्तारित रूप है। मल्लिका का चरित्र एक प्रेयसी और प्रेरणा का नहीं, भूमि में रोपित उस आस्था का भी है जो उपर से झुलस कर भी अपने मूल में विरोपित नहीं होती है।

कालिदास पर व्रती, तपस्वी न होकर दुर्बल होने का आरोप किया गया है। पर राकेशजी ने उसे मानवीयता से युक्त दिखाया है। आधुनिकता की दृष्टि से उसमें थोडा परिवर्तन किया है। वह दुर्बल नहीं, कोमल, अस्थिर और अन्तर्द्वन्द से पीड़ित है।

"लहरों का राजहंस" अश्वघोष के "सौंदरनंद" काव्य पर आधारित है। अश्वघोष की कथा "धम्मपद की टीका" का कथा से भिन्न है। उसी तरह राकेश ने भी थोडी स्वतंत्रता ली है। नन्द सुंदरी की कथा आश्रय मात्र है। बौद्ध का सौतेला भाई नन्द उसकी पत्नी सुंदरी, दोंनों का अन्तर्द्वन्द प्रस्तुत किया है। ऐतिहासिक परिधि में आधुनिकता आयी है। यह द्वन्द सदैव सर्वत्र रहने वाला है। सुन्दरी जो स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी, गर्वमयी है और जो अपने सौन्दर्य, प्रणय से नन्द को बाँधती है, अंत में बिखर जाती है। दोनों का अन्तर्द्वन्द प्रतीक द्वारा व्यक्त किया गया है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार इतिहास जो वर्तमान की व्याख्या का सशक्त साधन बना, राकेशजी ने उसे प्रतीक रूप में अपनाया। फिर उनका कालिदास व्यक्ति न होकर सृजनशक्ति का प्रतीक बना। उनके नाटक का साधन बना। यहाँ इतिहास समकालीनता का वाहक होने से कालिदास राकेश के विचार प्रस्तुत करता है, वह आज का सर्जक कलाकार है। मल्लिका में आज के नारी का आक्रोश है। नन्द-सुन्दरी द्वारा अन्तर्विरोध दिखाया गया है। राकेशजी खुद कहते हैं - "मैंने इस इतिहास कथा का उपयोग इसलिये किया, क्योंकि इस कथा के माध्यम से विशेष प्रकार की व्याख्या प्रस्तुत की जा सकती थी। बुद्ध और नन्द को पत्नी सुंदरी के बीच होने वाले संघर्ष का भी मैं उपयोग करना चाहता था।"

## संदर्भ

1· लहरों के राजहंस - मोहन राकेश, पृ·10

2· मोहन राकेश - व्यक्तित्व और कृतित्व - ले·सुषमा अग्रवाल, पृ·60